प्रस्तावना:

पहली कक्षा से लेकर आज तक पढ़ाई के लिए हमे अलग अलग विषय थे । भ्रमण ऐसा विषय होता हैं ,यह केवल सुना था। पर पहली बार हमें यह भ्रमण विषय था। भ्रमण, जिसमें बाहर के स्थानों पर जाने के कार्यक्रम शामिल रहते हैं, आमतौर पर स्वयं में सम्पूर्ण होते हैं। वे किसी एक स्थान पर जाने से सम्बद्ध होते हैं और उनका उद्देश्य मुख्य तौर से बच्चों की रुचि और आनन्द को बनाए रखने का होता है। हमारा यह भ्रमण जनवरी या फरवरी में होगा यह बताया गया। और यह भी बताया कि भ्रमण के लिए काशी/ वाराणसी जाने वाले थे। इस नगर का प्राचीन 'वाराणसी' नाम लोकोच्चारण से 'बनारस' हो गया था ।इसे देवो की नगरी कहाँ जाता है।भारत के कई दार्शनिक, कवि, लेखक, संगीतज्ञ वाराणसी में रहे हैं, जिनमें कबीर, वल्लभाचार्य, रविदास, स्वामी रामानंद, मुंशी प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद,गिरिजा देवी, पंडित हरि प्रसाद चौरसिया एवं उस्ताद बिस्मिल्लाह खां आदि कुछ हैं। इतना सब जानने के बाद, बनारस को देखना मेरा ख़्वाब बन चूका था। और उसी दिन से दिमाग और मन में तैयारिया आनी शुरू हो गई थी। जब बताया गया था तब सब बच्चे राजी नही थे।पर बाद में सब तैयार हो गए। और शायद हमारे संख्या ५५ थी इसीलिए हमें इतना मजा आया था।एक दूसरे को समझने का मौका भी मिला था। दोस्तों के बहुत करीब आ गए ।जिस जिस जगह पर हम जाने वाले थे।उन सबसे हमे पहले ही अवगत कराया गया था।

उसके बाद हमारा ७ फरवरी को बनारस जाने का तय हो गया था।पर हमारी तयारियां तो बहुत पहले ही शुरू हो चुकी थी । ५ फरवरी को आइएसे परीक्षा खत्म हो गयी। ६ फरवरी को हमें मिस ने छुट्टी दे रखी थी।और इस पूरे दिन मैंने सारी खरीदारी और रात तक अपना समान बांध कर रख दिया था ।और अगले दिन का बेसबरी से इंतजार था।

अगले दिन 8:30 बजे हमारी रेल आने वाली थी।कुछ मडगाँव स्टेशन पर चढ़ने वाले थे और कुछ थिविम स्टेशन पर।मैं मडगाँव पर ही रेल में चढ़ने वाली थी।सफर लंबा था। हमारी पहली रेल मडगांव से दादर तक की थी।और फिर वह से अगली बनारस थी। यह मेरा दोस्तो के साथ पहला सफर था। और इसी कारण मन में उत्साह था और थोड़ा सा डर भी था की, पहली बार इतनी दूर और परिवार वालों से इतनी दूर १० दिन के लिए जाना था।

मैं ने पहले से ही इंटरनेट पर काशी पर खोज की थी ।काशी में जहाँ हम जाने वाले थे वे चित्र भी थोड़े देख लिए थे ,जैसे की गंगा नदी का चित्र वगैरा। पर प्रत्यक्ष रूप में वहा जाकर देखना एक ख्वाब था ।और इस भ्रहमण के जरिए वह ख्वाब मेरा पूरा हो गया था। शुरुआत से ही मुझे प्रेमचंद से लगाव था। और हम प्रेमचंद के गांव लमही जाने वाले थे। हिंदी प्रदेश में जाने वाले थे, इसकी बहुत खुशी थी।

७ फरवरी २०२०

ट्रेन मडगांव से करीबन ९.०० बज कर छूठ गयी और शुरू हो गया रेल का सफर। हमारे आधे दोस्त हमें मिल गए थे और आधे आगे मिलने वाले थे और इसी कारण हम बाहर देख रहे थे कि कब थिविम पहुचे जाए और आखिर पहुच गए उन्हें देखकर और जादा खुशी हो गयी थी। मानो ऐसा प्रतीत हो रहा था कि दोस्तो के साथ नही बल्कि अपने परिवार के साथ घूमने निकले हो। और हसी मजाक का एक अनोखा माहौल बन गया था। सब मिलकर रहने लगे थे यहा तक कि खाना भी हम मिल बाटकर खा रहे थे और सभी का स्वादिष्ठ और अलग अलग प्रकार का खाना खा कर और अच्छा प्रतित हो रहा था।

हम दादर पहुंच गए करीबन 9:00 बजे।और फिर वह से हमे एलटीटी स्टेशन पर जाना था।जो कि दादर स्टेशन से लोकल रेल लेनी थी। लोकल रेल केवल 5 मिनट तक ही रुकने वाली थी।हमारी कुल मिलाकर संख्या ५५ उनमे ३ शिक्षिकाएं थी। हमारी विभाग अध्यक्ष मिस वृषाली,मिस मेघधा, और सर दीपक।संख्या ज्यादा होने से एक साथ सब को रेल में घुसना बहुत ही मुश्किल था। पर जैसे ही रेल आयी पहले कहा गया कि यह रेल नही है और फिर तभी मिस ने कहा यही रेल है और हड़बड़ाहट में सब अपने समान को लेकर जो डिब्बा सामने मिल रहा था उस पर चढ़ने लगे। रात का समय था और भीड़ भी थी।लोगों का घर जाने का वक्त था। जैसे सुना था मुंबई में भिड़ बॉडीज होती है वैसी ही भीड़ थी।मैं और मेरी सहेलिया सामने जो कंपार्टमेंट दिखा उस पर चढ़ गए।अन्दर देखा तो पता चला कि वह पुरुषो का कंपार्टमेंट था। उन लोगो ने हमे कहा कोई बात नही बच्चो बैठ जाओ।हम लोग तो किसी तरह चढ़ गए थे पर इस बीच

जो हमारी एक सहेली थी,वह पीछे रह गई ।उससे रेल छूठ गयी।पर अच्छा हुआ कि उसके साथ मिस रुक गयी।मिस ने अंदर जाते वक्त सुना कि, कोई पीछे लड़की गिर रही है और इसकारण मिस उसके साथ रुक गयी।और इस बात की हमे कोई खबर नहीं थी।जब हम लोग स्टेशन पर पहुंच गए कुर्ला ,तब पता चला कि रतिका हमारी सहेली मिल ही नहीं रही थी, और मिस भी हमारे साथ नहीं थी।मैंने उसे फ़ोन करने की कोशिश की पर उसका फ़ोन नही लग रहा था। हमें घबराहट होने लगी। उसी बीच मिस का फोन आया कि रतिका उनके साथ है और वे अगली रेल पकड़ कर आ रहे है।थोड़ी देर बाद मिस और रतिका आ गए।आते ही हमारे पास आकर वह रोने लगी थी । घबराहट के मारे उसे पसीने छूट रहे थे। वह बहुत ही घबराई हुई थी। वह बताने लगी कि उसे बहुत डर लगा था। कि सब उसके साथी चले गए और वह अकेली ही उस अनजान शहर में दादर स्टेशन पर रह गई थी। अपने परिवार से इतनी दूर और कहीं खो जाना और वह भी एक अनजाने शहर जहां पर उसको कुछ भी नहीं पता था वहा पर खो जाना ,उसकी हालत क्या हो गयी थी उसका अंदाजा लगाया जा सकता है।उस घटना के बाद हम लोग सब सतर्क हो गए थे कि ,सबको एक साथ रहना है और हाथ नहीं छोड़ना है सबको साथ में लेकर ही चलना है।उसके बाद हमें वहां से चलकर एलटीटी स्टेशन पर जाना था। जो करीब आधे घंटे का रास्ता था ।और आखिर कर वहा पहुंच गए। बहुत सारे लोग वहां पर ठहरे हुए थे ।अपनी रेल का इंतजार कर रहे थे। वहां पर सब को बैठने के लिए जगह नहीं थी ।हम सोच रहे रहे थे , कि पूरी रात कैसे कटेगी। पूरी रात हमें वही स्टेशन पर गुजारनी थी ।और अगले दिन दोपहर के 2:00 बजे हमारी बनारस जाने वाली रेल थी ।तो पूरी रात उसी स्टेशन पर गुजरना बहुत ही मुश्किल था क्यू की हम पहले से १२ घंटे का सफर करके आये थे।जहां पर ठीक से सभी को बैठने के लिए जगह भी नहीं थी वहा पर पूरी रात कैसे कटेगी। फिर वहा से हमे आगे लेकर गए।वह जगह बहुत ही बड़ी थी ।बैठने के लिए जगह भी बहुत थी। पहले जहा रुके हुए थे उस जगह से वह जगह काफी हद तक अच्छी थी। हमारे साथ साथ और भी यात्री वहां थे। जो अपनी रेल के लिए रुके हुए थे। जहां जिसको जगह मिल रही मिली वहां अपने सामान लेकर बैठ गए थे।

एलटीटी स्टेशन पर बिताई रात

हम में से आधे सो गए थे ।और आधे समान की रखवाली कर रहे थे। उनमें मैं भी थी।बेचारे सोये ही थे कि, तभी पुलिस डण्डे लेकर आ गये। जो सो गये थे उनके सामने डण्डे मारकर उन्हें जगाने लगे । रात भर किसी को सोने नहीं दिया। पूछने पर बताया गया कि, वहां चोरी बहुत होती है ,और फिर अगर सो गए तो किसी का सामान चोरी होने की संभावना होती है। इस कारण वे किसी को सोने नहीं देते। यह अच्छी बात थी ।पर तुरंत जैसे पोलिस आगे चलते आधे लोग सो जाते ।कोई कोई तो बैठकर ही आंखें बंद करके सो जाता। फिर,जैसे ही डण्डे का आवाज सुनाई देता उठ जाते। यहां तक कि सोये हुए भी ऐसे उठकर बैठ जाते जैसे कि वे सोये ही नहीं थे। सारी रात वहां किसी को भी सोने नहीं मिला था। थोड़ी देर के लिए जब पुलिस गायब हो गए थे।तब पता नही  एक पागल लड़की वहां आ गई। मुझे आज भी शक है कि वह लड़की पागल नहीं थी वह बस एक ढोंग रचा रही थी। पहले तो वह हमारे पास नहीं थी। आगे रहकर उटपटांग हरकतें कर रही थी।अपनी हरकतों से वे लोगो को अपनी ओर आकर्षित कर रही थी।लोग उसे देखरकर हँसे जा रहे थे।।थोड़ी देर बाद उसकी हरकतें  में बदल आ गया।वह और उछलकूद करने लगी।अकेले में बड़बड़ाना, और जोरो से हँसने लगी थी। ऐसे ही करते करते वह हमारे पास आकर बैठ गयी।सब को देखकर जोर जोर से हँसने लगी। उसकी हरकतो से हम सभी उससे तंग आ गए थे। और न जाने क्या क्या अकेले में बड़बड़ाने लगी थी।हद तो तब हो गई जब उसने एक लड़की का बैग उठा लिया।वह उसे लेकर दौड़ने की ही  कोशिश कर रही थी की सर दीपक ने वह बैग उससे खिंच लिया और बाजू में रखा और गुस्से से उसकी तरफ देखा।हम

सबने भी उसे नजरअंदाज कर देना शुरू किया। पोलिस को बुलाने भी गए पर कोई नही आया। फिर कुछ समय बाद वह अपने आप चली गयी। वह रात उस लड़की के कारण और यादगार बन गई थी।कभी न भूलने वाला किस्सा बन चुका था। बहुत सारी यादें है उस रात को लेकर। और ऐसे में ही वह रात भी बित गयी।

८ फरवरी २०२०

सुबह हो गई हम हमने मुँह- हाथ धो कर चाय पी ली। और बनारस रेल का इंतजार करने लगे। करीबन १.०० बजे हम अपना सामान लेकर प्लेटफार्म पर जाकर रुक गए। एलटीटी से बनारस जाने वाली रेल २.०० बजे के आसपास आ गयी थी। अपना समान लेकर हमने अपने अपने सीट पर जाकर बैठ गए। अपने समान को चैन लगाकर कुली लगा दी।हमारे दोस्त अलग अलग कंपार्टमेंट में थे। उनसे जाकर हम मिलने लगे। बाते करने लगे। अपने अगल बगल जो लोग थे उनकी बाते बताने लगे। अपनी कंपार्टमेंट में जो हो रहा था वह उनको बताने लगे। बातो बातो में श्याम हो गयी थी।चा.... चाय .... की आवाज आ गयी।रेल की चाय बहुत अच्छी थी।अदरक वाली,एक प्याला कम पड़ता था।बनारस जाते समय छोटे छोटे स्टेशन आ रहे थे । और वह से बहुत लोग आ गए थे,जिनकी सीट बुक नही थी। और उनको जहा सीट मिल रहे थे वहा जाकर,बैठ रहे थे। पर हमने किसी को अपने जगह पर बैठने नही दिया था।

हमारे बगल में नो दोस्त थे उनमे से आधे सो गए थे और आधे लेटे थे। पर फिर भी लोग आकर उनके पास बैठ रहे थे। २-३ लड़के आकर उनके पास खड़े हो गए और उन्हें निहारने लगे थे। इस बात पर मेरी सहेली को बहुत गुस्सा आया उनसे अपनी आवाज बढ़ाकर कहा कि ,देखा भाई साहब आप वहा से हट जाइए उनको तकलीफ हो रही है। उसके बाद हमारे पास कोई भी बैठने नही आया फिर रात का खाना खाने के बाद  थोड़ी देर अंताक्षरी खेल ली और उसके बाद सब अपनी सीट पर सोने चले गये।रात में रेल काफी गति से चल रही थी। पहले तो नींद ही नहीं आ रही थी, रेल हिल रही थी या हम हिल रहे थे कुछ समाज नही आ रहा था । मेरा सीट सबसे ऊपर था। मुझे डर लग रहा था क्योंकि, मैं पहली बार  रेल में सफर कर रही  थी।  लग रहा था कि कई मैं नींद में ज्यादा रेल हिलने से नीचे ना गिर जाऊं। पर जैसी रात के १.०० - २.००  बज गए फिर नींद भी आ गई और डर भी चला गया।

९ फरवरी २०२०

सुबह होते ही आंख खुल गई पता चला कि हम पहुंचे हैं।मुँह- हाथ धोकर चाय ले ली। अपने साथ हमने बिस्किट भी घर से लाया था लाई थी। वह भी सबके साथ मिल बाटकर खाली।बाते करते करते समय बीत गया। दोपहर का खाना खा लिया जैसे सुना था कि रेल का खाना अच्छा नहीं लगता है, तब कहीं ना कहीं महसूस हो रहा था। ऐसा नहीं है कि उनका खाना अच्छा नहीं है, फर्क सिर्फ इस बात का है कि हमें उनके खाने की आदत नहीं है।पर अपने शहर से इतना दूर दूसरे शहर में जाना था तो पहले से ही एक मन बना रखा था कि, हमारे यहां जैसे खाना मिलता है वैसीही स्वाद वहा नहीं मिलेगी।

हम उत्तर प्रदेश के करीब थी रेल ने अपनी रफ्तार ले ली थी। बाहर का नजारा भी तेजी से आगे बढ़ रहा था। खेती नजर आ रही थी। गन्ने के खेत काफी नजर आ रहे थे, सरसों के खेत

फिर फलों के और सब्जी भी दिख रही थी।  उत्तर प्रदेश में प्रवेश करने के बाद नजारा कुछ अलग हो गया । उनके मकान अलग प्रकार से बने हुए थे। अपनी मर्जी से उन्होंने बनवा रखे थे। छोटी-छोटी जगह पर बहुत बड़े-बड़े मकान दिख रहे थे। सीमेंट का इस्तेमाल उनके मकानों में नही था।इलाहाबाद पहुचने पर हमें वह तोड़ती पत्थर कविता याद आ गयी।उसके बाद समय ऐसे ही बीत गया। दोस्तो के साथ समय किस प्रकार निकल गया पता ही नही चला।

रात के ७.३०  बजे हम वाराणसी पहुंचे। वाराणसी स्टेशन बहुत बड़ा था और बहुत बड़े बड़े अक्षरों में बाहर वाराणसी लिखा हुआ चमक रहा था। अपना समान लेकर हम रेल से उतरे। बाहर आते समय मेरी सेंडल टूट गई थी। मेरा बैग मेरी सहेली क्षितिजा ने ले लिया था। वह मेरा बहुत ही ख्याल रख रही थी। मानो जैसे मेरी बड़ी बहन हो।उसी टूटी हुई चप्पल को लेकर मैं चलती रही।

स्टेशन पर हॉटल ने अपनी गाड़ियां भेजी थी। स्टेशन से हॉटल तक आते समय हमने बहुत कुछ देखा। जैसे कि २-३ शादिया देखी। दूल्हे दुल्हन, दूल्हा घोड़े पर सवार होकर जा रहा था। और बाराती रास्ते पर नाच रहे थे। पहली बार ऐसा देखा था हमारे यहां तो रात के समय शादी होती ही नहीं है ,और अगर हो भी जाए तो घोड़े पर दूल्हा नही होता है।दूल्हे को घोड़ो पर मैंने केवल फिल्मों में ही देखा था। और आज हकीकत में यहां सब देखने मिल रहा था।

और हम हॉटेल पैराडाइस पहुँच गए। हॉटल जाने के बाद जान में जान  आयी थी । थकावट के मारे जैसे कुछ हो रहा था ।तबी हमे बताया कि एक कमरे में ३ लोग रह रखते है । और हम तीनों मै और मेरे दो दोस्त एक दूसरे को देखकर मुस्कुराने लगे ,ऐसे प्रतीत हुआ कि यही तो हम चाहते थे मेम ने तो जैसे दिल की बात ही पढ़ ली थी। अपना कमरा देखकर और भी खुशी के मारे पागल हो गए । और इतनी खुशी की बात यह थी कि ,सभी के कमरे में बैलक्नी नही थी ,खुश किसमत से हमे मिली थी। और उसके बाद हम नहा धोकर अपने दोस्तों के कमरों में झाँकने निकल पड़े थे । उसके बाद हमारे कमरे में खाना आ गया और खाना बहुत ही स्वादिष्ट था थके होने के कारण सभी को निंद भी आ रही थी पर सब साथ होने से कोई कह नही रहा था । देर रात तक अंताक्षरी और दम शरारत खेलते रहे और करीब १.३० बजे सो गए । मेरे दोस्त बहुत ही खुश थी कि हमे बैलक्नी मिली हुई थी और हम कमरे के रात में पहुचे थे तो बाहर सभी जगह अंधेरा था और बस झाड़िया ही हल्की सी दिख रही थी । सुबह  बैलक्नी से बनारस देखने मिलेगा इसी इच्छा से सोये थे और सबसे पहले मै ही उतावली हो गयी थी । जैसे सुबह उठकर देखा मैं ढंग रह गयी क्यों कि नीचे पूरी नाली बह रही थी ।

१० फरवरी २०२०

बनारस में पहला दिन था। हम काशी हिंदू विश्वविद्यालय देखने  जाने वाले थे। जिस जगह पर हम ठहरे हुए थे हॉटल पैराडाइस ,वहा से विश्वविद्यालय ज्यादा दूरी पर नहीं था ।करीबन 9:00 बजे हम हॉटल से निकल पड़े। हम बनारस की गलियों से गुजर रहे थे।

दुकाने नजर आ रही थी ।सारे रास्ते पर बातचीत करते हुए हर एक दुकान को देखते देखते आगे बढ़ रहे थे। हम तो पहले से ही तय कर चुके थे कि, किस किस दुकान से हमें क्या-क्या खरीदना है । और बड़े उत्साह के साथ कह रहे थे कि इसी नाम से ,यह दुकान तो गोवा में भी है। सारे रास्ते यही बाते हो रही थी। जैसे-जैसे रास्ते पर पहुंच गए रास्तों पर यातायत बहुत ही था। वहां पर कोई पोलिस नजर नहीं आ रहा था। अगर हाथ भी दिखाया जाए तो कोई नहीं रुकते है।गाड़ियां इतनी तेज रफ्तार से जाती है कि,चलते हुए लोग उन्हें दिखाई नही देते हैं। वहाँ गाडियो के लिए ढंग का तरीका नहीं है।शायद इसी कारण हमने आते समय बहुत सारी गाड़ियों को एक दूसरे से टकराते हुए भी देख लिया था।ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन होता है और रास्तों पर बहुत ही शोर हुआ करता है।15 मिनट में हम चलते काशी हिंदू विश्वविद्यालय पहुँच गए । एक बड़ी सी गेट थी जिस पर बड़े अक्षरों में काशी हिंदू विश्वविद्यालय लिखा गया था।उसी के अंदर से विश्वविद्यालय शुरू होता है। उसे 'बी एच यू' भी कहा जाता है।विश्वविद्यालय को "राष्ट्रीय महत्त्व का संस्थान" का दर्ज़ा प्राप्त है। उसके बारे में बहुत कुछ सुना था।उसके प्रांगण में बहुत कुछ देखने लायक था। जैसे कि,विश्वनाथ का मंदिर वह का प्रसिद्ध है।बच्चे अलग-अलग परीवेश से वहा पढ़ने आते है। ज्यादा लड़कियां ही दिख रही थी। और वह भी गाड़ियां से नहीं परंतु साइकिल लेकर दिखाई दे रही थी। हमें हिंदी विभाग की ओर जाते समय बहुत सारे अन्य विभाग मिले थे।सभी समूह में घूम रही थी और न जाने क्या पर अपनी

किताबी बाते वह कर रही थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था वह अपना एक एक पल भी नही गवाना चाहते थे । अपने पढ़ाई के प्रति वे बहुत ही रुचि दिखा रहे थे।

हिंदी विभाग का के बाहर हम पहुंच गए । हिंदी विभाग के बाहर मैंने बहुत सारे पतंग भी देखे थे इस्से ज्ञात होता है कि जो कुछ दिन पहले त्यौहार उन्होंने वहां मनाया होगा ।।उनकी प्रोफेसर से हमारी मुलाकात हो गई। हमें एक कक्षा में बिठाया गया था। उनके शिक्षक ने हमें प्रेमचंद का ईदगाह और कबीर की काव्य पर बाते बताई।काव्य को देखने का नज़रिया बदल दिया।उनसे ज्ञान प्राप्ति हुई।उसके बाद हमने हिंदी विभाग के बाहर उनके प्रोफेसर के साथ एक चित्र निकाल लिया। फिर हिंदी विभाग की लाइब्रेरी भी देखी। उनकी किताबें देख ली। और वहा से आगे बढ़ गए।

वहां से आगे जाकर हम केंद्रीय ग्रंथालय मे पहुचे। उसमे पुरानी किताबो से लेकर सभी किताबे थी। हमारी संख्या बहुत थी इसकारण अंदर साथ नहीं छोड़ा गया। दो समूह किये गए। उस को देखते देखते दोपहर हो गई थी।

करीबन 2:00 बज गए। पास में जो खाने का हॉटेल मिला वह पर खाना खा लिया।उसके नजदीकी विश्वनाथ मंदिर का दर्शन लिया। मंदिर के बाहर किताबों की दुकाने थी। वहां से एक-दो किताब खरीद ने में रुक गए।तब तक बाकी के बच्चे कला भवन जाने के लिए निकल गए थे।

हम उन्हे कला भवन के पास जुड़ गए। कला भवन में जाने पर सूचना मिली कि ,भवन बंद होने में आधा घंटे है। आधे घण्टे में वह पूरा भवन देखना असंभव था। इसीलिए हम वहां से लौट आए। कला भवन के पास में ही एक पुस्तक मेला लगा हुआ था।हमने वहां जाकर अपनी पसंद की पुस्तके को खरीद लिया और बहुत सारी किताबें देखी, जो पाठ्यपुस्तक में लगी हुई थी उन्हें खरीद लिया।अब गंगा नदी पर जाना था।जो कि हमारे हॉटेल के करीब था। शाम हो गई थी

रास्ते में पूरी भीड़ थी।लोग अपने कामो से घर वापस लौट रहे थे। रास्ते पर हमने पहली बार वहां पर कुल्लड़ चाय पी थी जो कि वह की खासियत थी।

उसके बाद हम अपने खाने का इंतजाम करने गए।सोचा की यही से खाना लेकर जायेंगे। मैं मेरी २ सहेलिया और हमारे साथ दो हमारे दोस्त भी थे। हमारा खाना आते आते वक्त हो गया था ।और हम खाना लेकर निकलने ही वाले थे कि फोन आया बाकी सब गंगा नदी पर पहुच गए। और हमने सोचा कि हम हॉटेल जाए। हमे दुख नही था , कि हम गंगा पर नहीं जा पाए वहां की आरती नहीं देख पाए।क्यों कि,पता था कि अगले दिन भी हमें उसी घाट पर जाना है। हमने हॉटेल पर जाकर नहा धोकर ,खाना खाकर सो गए।

११ फरवरी २०२०

सुबह करीबन ७.०० बजे हम उठ गए। हाथ मुँह धोकर तयार हो गए। आज बहुत जगह देखने जाना था और ९.०० बजे गाड़िया लेने आने वाली थी। ८.०० बजे हम तयार हो चुके थे। हमारा नाश्ता हमारे कमरे में आ गया था ।नष्ट करके ,कमरा बंद करके हम निचे इकठ्ठा हो गए। सब आने के बाद हम बनारस देखने निकल पड़े।सबसे पहले तो सारनाथ गए।सारनाथ में बहुत ही अच्छी गौतम बुद्ध की ऊँची मूर्ति थी । वहाँ का माहौल भी शांत था । बहुत सारे लोग अपने परिवार के साथ दर्शन के लिए आये थे । औऱ भीड़ बहुत थी । हमे अपना ध्यान खुद रखना था । हमारे सारे दोस्त यहा वहा

हो गए थे ।अन्दर एक और बुद्ध की मूर्ति थी ।वहां पर बहुत सारे लोग आये थे। बच्चे भी थे शायद उनको स्कूल से बुद्ध की मूर्ति देखने लाया गया था। हमें बताया गया था कि ,सब को साथ में रहना है एक समूह के साथ रहना है ।और उसी तरह हम लोग आगे बढ़ रहे थे । जैसे ही बुद्ध की मूर्ति देखी सबसे पहले सब लोग अलग-अलग तरह से तस्वीरें खींचने लगे थे ।गौतम बुद्ध की तस्वीर लेने से ज्यादा सभी अपनी तस्वीरें लेने लगे थे। उसके बाद हम लोगों ने बुद्ध की जो बड़ी मूर्ति थी उसके ठीक नीचे रहकर तस्वीर खींच ली । उसके बगल में एक बुद्ध का छोटा सा मंदिर भी था ।वहाँ पर भी बुद्ध की मूर्ति थी और तस्वीर लेने के लिए लोग खड़े थे और किसी तरह  हम लोगो ने भी वहा पर दीपक सर के साथ बैठकरन तस्वीर खींच ली।वहां पर बहुत सारे लोग बुद्ध जी की मूर्ति देखने आते हैं, जैसे हमारे यहां बहुत शोर होता है किसी भी मंदिर में वैसे वहां बिलकूल भी  नहीं था।वहाँ सिर्फ हम ही शोर और जोर जोर से बाते कर रहे थे,और कोई  हमारे जितना आवाज नही कर रहा था।यहा तक कि  बच्चे भी हमारे तरफ देखे जा रहे थे और वे भी हमारे जितना शोर नहीं कर रहे थे।उसके बाद हम उसकी बाहर जो छोटे-छोटे दुकान लगी हुई थी वहाँ खरीददारी करने लगे । मिस बार बार बुला रही थी की,चलो बच्चो आगे बढ़ो। वहाँ बुद्ध की मूर्तियां थी  हम लोगों ने वहां से बहुत खरीददारी की थी। और बैग भी थी जो उन्होंने अपने हाथों से बनाये हुए थे और बहुत ही सुन्दर कारीगिरी उनपर  की  हुई  थी।  उनकी अलग-अलग मूल्य थे।छोटे -बड़े सभी तरह के थे।छोटो का मूल्य 30  रूपया था और बड़ो के 50 रुपया था।

उसके बाद हम लोग को वहां से साड़ीया दिखाने ले गए ।साड़ी कारखाना था वह। जहां पर साडिया कैसी होती है वह दिखाया गया था। हम लोग बहुत ही बारकाई से देख रहे थे।जो वहां लोग साड़ियां बना रहे थे, वह ज्यादा श्रीमंत नहीं लग रहे थे जैसे जाहिर सी बात है कि आम लोग ही बना रहे थे।हमारे साथ हमारा दोस्त प्रशांत था वह हर जगह वीडियो बना रहा था ।वह यहाँ पर भी वीडियो बनाने लगा।उसने मेरा मोबाइल लिया था और वह हमारे साथ ही था।उसने उन लोगो से कहा कि क्या आप बता सकते हो ये साड़िया कैसी बनती है।तभी किसी ने उससे कहा कि बताने के लिए पैसे लगेंगे। और यह सुनकर मैं भी पूछने ही वाली थी वह चुपचाप वहा से आगे निकल गयी। एक बात तो साफ थी कि वे लोग बहुत मेहनत से अपना दिमाग इस्तेमाल करके वह साड़िया बना रहे थे।और उसी में वे लीन थे। उसके अंदर जाकर एक बड़ा सा दुकान था जहां पर वह बहुत सारी साड़ियां थी।साड़ीया बहुत ही बढ़िया लग रही थी और वैसे ही बढ़िया उनके मूल्य थे। शुरुआत १००० से ऊपर थी। इसलिए हम लोगो ने वहां पर साड़ी नहीं ली थी। बस हम देख रहे थे कि ,दुल्हन की साड़ियां कैसी होती है और कैसी बनाई जाती है ।उनके जो पैटर्न है डिजाइन है वह कैसे तयार होते है।एक एक धागा मिलाकर वे लोग बना रहे थे। वहां की हर एक चीज को हम अच्छी प्रकार से निहार रहे थे ।

सारी कारखाना,सारनाथ

उसके बाद हम लमही प्रेमचंद के गाँव गए थे।लमही का प्रवेश द्वार आते ही,प्रेमचंद जी की छाप महसूस होने लगी थी।प्रेमचंद का वहा पर पुतला भी है, जो फूलो से सजाया हुआ था। उनके प्रसिद्ध उपन्यास ,कहानियां वहा मौजूद थे।जैसे गोदान,गबन आदि।ईदगाह कहानी के हामिद के चिमटा को कौन भूल सकता है। हामिद ने खिलौनों के बजाय इसे अपनी दादी के लिए खरीदा

था। वह चिमटा वहा पर रखा था।उनकी हर एक चीज को बहुत संभालकर रखा गया था।इससे ज्ञात होता है कि वे कितने महान व्यक्ति थे।बगल में उनका निवास स्थल था। वह खिड़की थी जहाँ पर बैठकर वे लिखा करते थे। वहा पहुचने से प्रेमचंद की सारी कहानिया ताजा हो गयी थी। वहा पर जो उस स्थान को संभालता है उन्होंने भी प्रेमचंद का अच्छे प्रकार से परिचय दे दिया था, और उनकी  बहुत सारी बातों से परिचित करवाया था।

लमही के बाद हम कबीर का महल देखने लहरतारा गए ।कबीर का महल बहुत ही भव्य था ।जैसे पुरानी जमाने में राजा के महल हुआ करते थे।उसी प्रकार वह महल जैसे लग रहा था ।महल के बाहर फूलों के पौधे लगाए गए थे।उनपर बहुत ही सुंदर सुंदर, बड़े-बड़े फूल उगे हुए थे। अंदर जाते समय फूलों की महक मन को मोहित कर रही थी। फूलों का रस पीने के रंगबिरंगी तितलीया भी उनपर मंडरा रही थी। महल में जाते समय शांतता थी।अन्दर  कबीर की मूर्ति थी और वहां के लोग उन्हें पुझते थे। जैसे हमारे यहां मंदिरों में भगवान की मूर्ति होती है वैसे ही वहां कबीर की मूर्ति थी। जिसप्रकार मंदिरों में भगवान का दर्शन लेने के बाद प्रसाद मिलता है ,उसी प्रकार वहां भी प्रसाद मिल रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि हम किसी मंदिर में ही आए हुए हैं। और कबीर कोई संत नहीं पर भगवान लग रहा था।

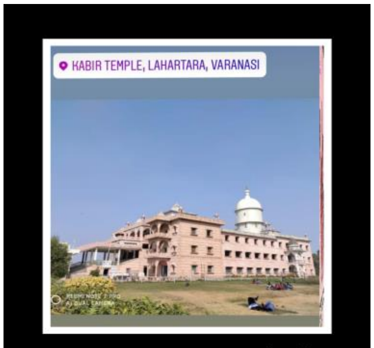

कबीर मंदिर.....

कबीर का महल देखने के बाद हम भोजन के लिए रवाना हो गए। हमने खाना खाने के बाद बहार फलो की दुकानें रहे वह से अँगूर लेकर खाये ।अँगूर मीठे थे और सभी ले रहे थे।वहा पान का दुकान था। वहा बनारसी पान मिल रहा था और मीठा पान भी मिल रहा था। मेरे साथी मित्र को बनारसी पान चाहिए था और वह खरीदकर लाया। गाड़ी में बैठने के बाद वह सबको खुशी से बता रहा था कि ,उसने बनारसी पान लिया है ।हमें खोलकर दिखाने लगा पर तभी किसी ने कहा यह बनारसी पान नही है, यह तो केवल मीठा पान है और उसे बनारसी पान का चित्र भी दिखाया। सब हंस पडे थे। उसे बेचारे को उल्लू बनाया गया था। उसके इसके बाद हम हँसी-मजाक करते करते गंगा नदी की सैर के लिए गए थे ।गंगा नदी पर जाकर घाटों को देखना एक सपना था। गंगा नदी के बारे में बहुत ही सुना था। और वहां का दृश्य भी देखा था ।वह देखने में वह बहुत ही लाजवाब लग रहा था ,प्रत्यक्ष रूप में आज हम आखिरकार वहां जाने वाले थे। नाव में सवार होकर हम नदी की सैर करने वाले थे मन में बहुत खुशी और उस्तुकता थी।

नाव में सवार होकर हमने गंगा नदी किस शहर की सारे घाटों को देखा नाउ घाटों के करीब से होकर गुजर रही थी।हमें जो नाव चला रहा था वह ,हर घाट की अपनी  पौराणिक कथाएं बता रहा था।अधिकांश घाट स्नान और पूजा समारोह घाट हैं, जबकि दो घाटों को विशेष रूप से श्मशान स्थलों के रूप में उपयोग किया जाता है।और वह का लोकप्रिय मणिकर्णिका घाट है उसे

शमशान घाट भी कहा जाता है, उसकी कथा भी सुनाई की,शंकर भगवान ने श्राप दिया था कि,वह २४ घंटे हर रोज कोई कोई जलता ही रहेगा।सब घाट देखते देखते रात हो चुकी थी। दशाश्वमेघ घाट यह एक काशी का सुप्रसिद्ध घाट है |हिंदू लोग इसे परम पवित्र मानते हैं | यहीं ब्रहमा ने दशाश्वमेघ यज्ञों का अनुष्ठान किया था और इसकारण उसे दशाश्वमेघ घाट कहा जाता है।रात के समय नजारा देखने लायक था।बिजलियों के कारण और भी सुंदर दिख रहा था। गंगा नदी से अस्सी घाट को देखना हर किसी का सपना होता है, और मेरा वह सपना पूरा हो गया था। चांद और तारों की रोशनी के कारण गंगा नदी और पवित्र लग रही थी।हमने अपने साथ गंगाजल भी ले लिया था।हमने द्रोण लिया था, जो की आरती होने के पश्चात नदी में दुआ करके छोड़ना था। हमने नाव में ही रहकर घाटों पर आरती देख ली थी। मन प्रसन्न हो गया और आरती होने के बाद हमने खाना खाकर होटल लौट गए फिर नहा धोकर सो गए।

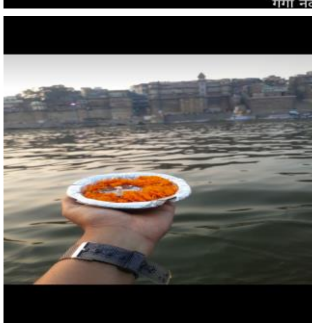

१२ फरवरी २०२०

सुबह, रोज की तरह से आज जल्दी उठना था।क्योंकि हमें बताया था कि ,कल हमें सुबह साड़ी पहनकर मंदिर जाना है। और सब ने तय किया कि हमें 5:30 बजे उठना पड़ेगा। जैसे पता ही है कि साड़ी पहनने की के लिए देर हो जाती है ।5:30 बजेअलार्म हो गया ।और उसे हमने बंद करके सो गए। सोचा की 6:00 बजे उठ जाएंगे पर पता ही नहीं चला कि कब 7:30 बज गए। और जैसे हम उठे तीनों हड़बड़ाहट में तैयार होने में लग गए । साड़ी पहनना मुश्किल था ,मैंने साड़ी नही पहनी थी।पर सब साड़ियां पहनकर बहुत बढ़िया लग रहे थे।अलग प्रकार का माहौल बना रखा था। सबके चेहरे खुशी से चमक रहे थे। और फिर दर्शन के लिए पहुंचे ।दर्शन करने के लिए आधे बच्चे गए थे और आधे बाहर ही थे।मैं मेरी मिस मेघधा के साथ गाड़ी में ही बैठी रही। 1 घंटे बाद सब दर्शन करके वापस आ गए थे ।हमें गाड़ी लेने थोड़ी देर से आ गई थी और इसी कारण हमें देर हो चुकी थी। पहले से ही मिस ने कहा था कि अब जहां पर जाएंगे कम से कम समय में सब कुछ देखना है ।देर मत करो वरना सब कुछ देखने नही मिलेगा।मंदीर के दर्शन के बाद हम रामनगर किल्ला पर चले गए ।किल्ला के बाहर हम सब ने चाय नाश्ता किया ।और फिर रामनगर किल्ले के तरफ निकल पड़े। अंदर जाने के बाद पता चला किल्ला देखने के लिए टिकट निकालनी पड़ती है ।और उसके लिए बड़ी लंबी रांग लगी हुई थी और तेज धूप भी थी।इन्ही समस्या के कारण हमारी विभागाअध्यक्ष मिस वृषाली ने सबका मसहोला लेकर तय कर लिया कि अंदर नहीं जाएंगे बाहर से ही किल्ला को निहारेंगे। किल्ला को बाहर से देखकर लग रहा था कि वह पुराना और प्रसिद्ध है।किल्ले के बाहर लोग तस्वीरें लेने लिए मौजूद थे। उन्होंने हमसे भी कहा कि हमारी भी समूह के साथ बड़ी वाली तस्वीर लेकर जल्दी ही दे देंगे ।हम सब रुक भी गए थे पर मिस ने कहा कि ये लोग ऐसे ही तस्वीर देने के लिए वक्त जाया करेंगे और हमें वही देर हो जाएगी। फिर हमने फोन पर ही तस्वीर खींच ली, आखिरकार हमें तस्वीर ही चाहिए थी।

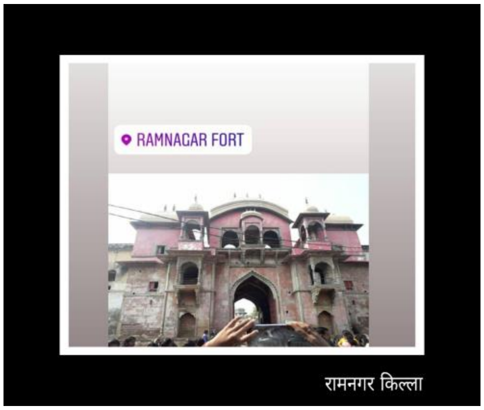

रामनगर किल्ला

उसके बाद हम दुर्गा मंदिर के लिए रवाना हो गए।दुर्गा मंदिर जाते वक्त रास्ते मे एक पूल मिला और वहा से रामनगर फोर्ट बहुत ही सुन्दर लग रहा था। ऊपर पूरा फोर्ट और उसके नीचे समन्दर था। समन्दर का पानी उछलकर फोर्ट को छू रहा था। उसके बाद हम लोगों ने दुर्गा मंदिर का दर्शन किया ।वह मंदिर बाकी मंदिरो से अलग था।उसका रंग ही मन को मोहित कर रहा था। लाल पत्थरों से बने अति भव्य इस मंदिर के एक तरफ "दुर्गा कुंड" है।उसका आकार भी औरो से अलग था। दर्शन के पहले हम सब ने वही पर खाना खा लिया था।इस बिच गाडियो के ड्राइवर के साथ नोकझोक हो गयी थी।वे बहुत ही गुस्सा कर रहे थे यह वहा ले जाने के लिए। जब कि उनका काम था कि हमे अच्छे प्रकार से बनारस घुमाये।

दुर्गा मंदिर

दुर्गा मंदिर के दर्शन के बाद हम कलाभवन जाने वाले थे वही कलाभवन जहा हम पहले जाकर आये थे। पर अंदर जाने नही मिला था।आखिरकार उस दिन हम पहुंच गए। वह भवन बहुत ही लाजवाब और बढ़िया था।अंदर फोन ले जाने के लिए बंधन था।बाहर ही फ़ोन और हमारा सामान रखा था।इस संग्रहालय में लगभग बाहर हजार विभिन्न शैलियों के चित्र संकलित हैं। इन सभी चित्रों की अपनी पृथक तथा रोमांचक कहानियाँ हैं। वहा पर बनारस के पुराने घर कैसे होते

थे ,बनारस की खासियत जैसे, बनारसी साड़िया वहा पर लगी हुई थी।और बहुत कुछ देखा जैसे कि वह दिन हमारा बनारस में आखिरी दिन था। इसी कारण हमें मिस ने  कहा कि खरीदारी करनी है तो चलते है।

आधे बच्चों ने पैसे होटल पर ही अपने कमरे में देख दिए थे। तो दो समूह कर दिए। थोड़े बच्चो को हॉटेल पर भेजा था।और हम मिस के साथ खरीददारी करने निकल पड़े।बनारस के गलियो से निकल कर बाजार पहुच गए थे।कला भवन देखते देखते श्याम हो गयी थी। पहले तो हमने कुलद चाय पी लिए और इसी बीच मेरी सहेली का फोन नीचे गिर गया उसकी स्क्रीन टूट गयी।वह उदास हो गयी।उसका मन ही नही था,सोच रही थी कि घर पर क्या कहूँगी।मैंने उसे समझाया कि कुछ नहीं होगा बस उसकी स्क्रीन की फूट गई है तो ठीक करवा लेंगे अभी अपना मूड खराब ना करें चलो खरीदारी करने चलते हैं। सब अपनी अपनी खरीदारी करने निकल पड़े। मिस ने कहां की ठीक 1 घंटे बाद 7:00 बजे इसी जगह पर मिलता है ।अलग-अलग समूह में अपने दोस्तों के साथ बठ गए। सबसे पहले सब अपनी मम्मी की और अपने घर की बाकी लोगों के लिए कपड़े खरीदने चले गए थे। जैसे कि पता ही है कि बनारस की साड़ियां बहुत ही लोकप्रिय है। बनारसी साड़ियां कहा जाता है। बहुत सारी दुकानें भी देख ली थी पर सभी के मूल्य बहुत ही ज्यादा बता रहे थे । शायद उन्हे पता था कि ,हम बाहर से आये है,बनारसी नही है और इसी लिए वे बढ़ाचढ़ा कर बता रहे थे। हम लोगों ने बहुत सारी दुकानों में जाकर मूल्य पूछकर बाहर आये थे। फिर देखते देखते समय हो गया था ७.०० बजकर हो गया था।हम सब ने तब जो मिला वह ले लिया।  करीबन 8:00 बजे हम सब फिर से इकठ्ठा हो गए।और उसके बाद रिक्षा लेकर हॉटेल द विलेज में खाना खाने निकल पड़े। रिक्षा में हमें चार पांच लोगों के साथ भेजा था ।और जाते-जाते हमने देखा कि हमारी रक्षा के ना आगे और ना ही पीछे कोई हमारी बाकी लोग दिख नही  रहे थे ।उनके रीक्षा भी नहीं दिख रही थी। ऐसे लग रहा था कि हम घूम हो गए।हम

कहा पहुच गए पता नही चल रहा था। एक पल के लिए हम डर गए थे क्योंकि अंजाना शहर और ऊपर से हमारे रिक्षा में एक भी लड़का नहीं था।सब एक दूसरे को देख रही थी। मैंने मेरी एक सहेली से कहा कि डरने की कोई आवश्यकता नहीं है हम ठीक तरीके से पहुंच जाएंगे।क्यू की वह  बहुत डरी हुई लग रही थी। और तभी हम सही सलामत पहुँच गए थे। सबसे पहले हमारी ही रिक्शा वहा विलेज होटल में पहुंच गई थी। पहुंचने के बाद दिल को सुकून मिला। डर तो मुझे भी लग रहा था उस रिक्शा में क्योंकि वे रास्ते और गलिया ही कुछ ऐसी थी , फिर भी मैंने उस डर को चेहरे पर जाहिर होने नहीं दिया । उसके बाद सब पहुँच गए।ऑर्डर दे दिया और खाना खाकर, पैराडाइस हॉटेल में जाकर सो गए।

बनारस में रिक्षा से सफर...

१३ फरवरी २०२०(बस सफर)

आज हमें बिहार जाने के लिए निकलना था। और बनारस की वह आखरी सुबह थी।मुझे वहा की चाय बहुत पसंद थी ।हम सुबह चाय पीने गए।उसके बाद थोड़ा घूमे।मिठाईया देखी ,उनकी शादी स्पेशल मिठाई थी जो मछली की तरह की थी

उसके बाद अपने कमरे पर आए।सामान बाहर निकल और एक साथ इकठा हो गए।उसी दिन खरीदारी करते वक्त एक लड़की का फोन चुरा लिया गया था।उसने अपना फोन जैकेट में रखा था और तभी उसका फोन चुरा लिया गया । वह बहुत रो रही थी हमने उसे समझाया कि जो हुआ वह जाने दो और अपना ख्याल रखना। उसके बाद जब सब लोग आ गए हम वहां से निकले।उस हॉटेल उनके कर्मचारी मेहनती थे। अपना काम समय पर करते हैं।और साथ ही हमारी मदत भी बहुत की। और अपने काम को लेकर भी लापरवाह बिल्कुल भी नहीं है ।जो भी वहां पर रहने आता है सब को एक समान तोलते है। हॉटेल से जाते समय उन्होंने हम सबको बड़े प्यार से उनके हॉटेल का कैलेंडर दिया था। और हमारे साथ समूह चित्र भी निकल था।

उन्होंने ही हमे बस तक रास्ता भी दिखाया था।फिर हमारा बिहार, पटना गया ,जाने का प्रवास शुरू हो गया।बस मैं बहुत ही शोर शुरू हो गया। सब अंताक्षरी खेलने लगे। अपनी सीटों पर कोई बैठ नहीं रहा था ।मस्ती मजाक का माहौल बन गया था। फिर थोड़ी देर बाद जब सबको नींद आने लगी तो सब सभी जान अपने अपने सीट पर जाकर सो गए।वह सफर बहुत ही लंबा था हम रात के करीबन 3:00 बजे पहुंचने वाले थे। रास्ते में एक ढाबा मिला जहां पर हम सब ने करीबन 9:00 बजे खाना खा लिया ।और फिर बस शुरू हो गयी। सुबह के ४.०० बजे पहूँच गये।उसके बाद हाथ मुँह धोकर बोध गया के लिए निकल पडे।

ढाबे पर खाना

१४फरवरी २०२०

सुबह करीबन 6:00 बजे निकले सबसे। पहले हम महाबोधि बुद्ध के मंदिर  गए। वहा बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया था। वहा फोन ले जाने में बँधी थी। इसी कारण बाहर रखने पडे। उसके बाद हम अंदर चले गए।मंदिर में शांतता थी। और सुबह का समय था तो और भी शांत था। वहा पर बहुत भीड़ भी थी। बहुत सारे लोग थे जो ध्यान कर रहे थे। दर्शन के लिए लंबी रांग थी।रांग से होकर हमने दर्शन लिए ।आजू-बाजू बहुत सारे लोग ध्यान करने के लिए बैठे थे।वहाँ एक विशाल पीपल का वृक्ष है जो मुख्य विहार के पीछे स्थित है।ऐसा कहा जाता है की, बुद्ध को इसी वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था। उसी के बाहर बगल में जगनाथ का मंदिर था। उसका भी दर्शन कर लिया। उसके बाद राम मंदिर भी गये। उसके बाद वहा छोटे-छोटे मंदिरो का दर्शन कर लिया। २-३ बुद्ध के मंदिर थे। हर एक मंदिर अलग अलग तरीके से बना हुआ था। हर मंदिरो में बुद्ध अलग अलग मुद्रा में बैठे थे।

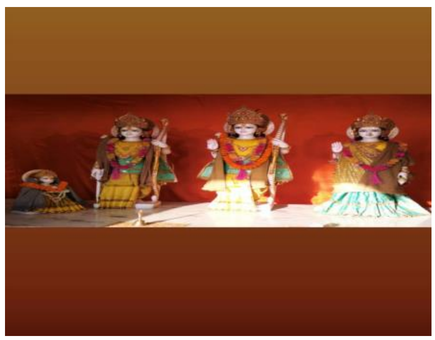

उसके बाद गया में सबसे बडी बुद्धा की मूर्ति को देखा।जो कि ध्यान की अवस्था में बैठे थे।उसके ही प्रांगण में बहुत सारे बुद्धा की खड़े रहकर मुर्तिया थी जो अलग अलग मुद्रा में थे। उसके बाहर बहुत सारी दुकानें भी थी। हमने बुद्ध की मूर्तिया खरीद ली थी। ऐसा सुना था कि ,बुद्ध की मूर्ति घरो में होनी चाहिए शांतता का प्रतीक माना जाता है।

और बस की यात्रा शुरू हो चुकी थी। पटना की और हम निकल पड़े थे जैसे हम गया पहुंचने लगे। वहां का जो मौसम वहां की जो हालात पर बहुत ही अलग थी जैसे पहले नहीं देखा था। वहां का जो माहौल वहां का वातावरण बिल्कुल ही अलग था। बहुत सारे पहाड़ नजर आ रहे थे और सबसे अलग ही प्रकार था।बहुत ही कम पेड़ नजर आ रहे थे। जैसे हमारी गोवा में बहुत चारों ओर झाड़ियां ही नजर आती है वहां वैसे नहीं था। पहाड़ी इलाका था।वह से गुजरते वक्त एक गाँव भी हमे मिला था।उस जगह को देखकर बहुत कुछ महसूस किया था और सिख भी मिली थी।उस गाँव मे गरीबी दिख रही थी।उस परिवेश को देख कर मन में बहुत पीड़ा महसूस हो रही थी।हमें रोज कुछ ना कुछ शिकायतें हमारी जिंदगी को लेकर जरूर होती रहती है। जबकि हमारे पास सब कुछ होता है और  बेचारे यह लोग जिनके पास कुछ भी सुख सुविधाएं नहीं होती है।यह सब देखकर बहुत कुछ सीख मिली थी।जैसे जैसे पहाड़ियों से गुजरते हम आगे बढ़ रहे थे , वह गाँव पीछे छूट रहा था। और अपने साथ बहुत सारी यादे और चेहरे पर बड़ी सी हंसी लेकर हम आगे बढ़ रहे थे।

दोपहर में हमने एक हॉटेल पर रूक कर खाना खा लिया और फिर से हमारी यात्रा शुरू हो गयी। शाम हो गयी थी।करीबन५.०० और६.०० के दरम्यान नालंदा विश्विद्यालय पहुंच गए। विश्विद्यालयके बाहर सब  इकट्ठा हो गए। अन्दर जाकर देखने के लिए टिकट था। टिकट निकाली और निकलने के बाद हम  अंदर चले गए। वहा पर लोग होते है जो,उस जगह के बारे में सब जानकारी रखते है ।तो उसी ने हमे पूरा विश्विद्यालय दिखाया। अत्यंत सुनियोजित ढंग से और विस्तृत क्षेत्र में बना हुआ यह विश्वविद्यालय स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना था। इसका पूरा परिसर एक विशाल दीवार से घिरा हुआ था। जिसमें प्रवेश के लिए एक मुख्य द्वार था। वह इठ से बना हुआ था।सबसे पुराना और सबसे पहला विश्विद्यालय है।इस विश्वविद्यालय

में भारत के विभिन्न क्षेत्रों से ही नहीं बल्कि कोरिया, जापान, चीन, तिब्बत, इंडोनेशिया, फारस तथा तुर्की से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। हम हर एक चीज को बहुत ही अच्छे प्रकार से निहार रहे थे ।उस विश्विद्यालय को ऐसा महसूस हुआ की , आज भी अगर वह होती तो बहुत बच्चों को उसका लाभ उठाने मिलता था। वहा पर  हम सब ने एक समूह चित्र सबके साथ निकाला था।वहा से बहुत सारी यादें लेकर हम बाहर निकले।उस विश्विद्यालय के बाहर बहुत सारी दुकाने भी थी। सब ने कुछ ना कुछ खरीद लिया था।

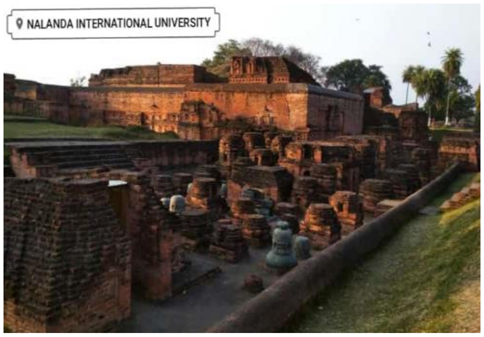

उस क्षेत्र में ज्यादा बच्चे पढ़ते नही होंगे क्यों कि हमने बहुत से बच्चो को देखा था काम करते हुए, तो कही हाथ गिड़गिड़ाते हुए।वहा से हम पटना के लिए रवाना हुए।जितनी जगह हमे बताया था वह सारी जगह हम देख चूके थे ।और नालंदा विश्वविद्यालय आखरी था।अगले दिन करीबन २.०० बजे हमारी मडगांव जाने वाली रेल थी। हमारे लिए पहले सी हॉटेल बुक किया हुआ था। केवल रात उस हॉटेल में बितानी थी ।

रात के ९.०० बज गए थे ।और वहा ट्रैफिक था इसकारण बस रुकी हुई थी।बस का ड्राइवर ने हमे हॉटेल छोड़ने से मना किया और हॉटेल से भी कोई लेने नही आये।इस वजह से पटना के नजदीक हॉटेल ढूढ़ना पड़ा।और पटना स्टेशन के ठीक सामने हमें हॉटेल मिल गया।रुम जादा नही मिले थे।जैसे बनारस में हम एक कमरे में ३ लोग रुके थे यहा पर  एक कमरे में  ५ को

रहना था।और बस एक रात की बात थी।३ लोगो से ज्यादा ५ लोगो के साथ रहकर अच्छा लगा।और रात में नहा धोकर, सब खाना खाकर एक साथ सो गये।

१५ फरवरी २०२० से १७ फरवरी २०२० तक

आज १२.०० बजे हमे हॉटेल से निकलना था।रात को ही समान भर कर रख दिया था।सुबह मिठाई खरीदने के लिए पटना घूमने गए।कई दूकाने घूम ली पर स्वादिष्ट मिठाई नही मिली ,पर हमारे वास्ते दुकानदार ने कहा कि वह १ घंटे में बना देगा।हमे लगा ११.३० तक बन जाएगी।

औऱ घूम फिरकर वापस लौटे टैब भी उनकी मिठाई नही बनी थी।ठीक १२.०० बजे उन्होंने हमे जैसे तैसे मिठाई बनाकर दे दी और हमने वहा से रिक्षा लेकर हॉटेल तक पहुँच गए।जल्द से जल्द कपड़े पहन लिए और समान उठाकर हॉटेल के बाहर सब के साथ मिल गए।५ मिनट में हम पटना स्टेशन पर पहुँच गए।सभी साथी अपने सामान के साथ घर वापस लौटने के लिए तयार थे। हम जहां हमारी ट्रेन आने वाली थी उस प्लेटफार्म पर जाकर ट्रेन का इंतजार कर रहे थे ।और तभी आवाज आयी कि पटना से मडगांव जाने वाली ट्रेन प्लेटफार्म नंबर पर आ रही है।और हमने अपना सामान उठाया और खड़े हो गए तभी रेल आकर पेलटफॉर्म पर रुक गई।

हम लोगों ने अपना सामान उठाकर जो हमारी सीट बुक की हुई थी वहां पर जाकर बैठ गए। हमें गोवा पहुंचने के लिए दो राते उस रेल में बितानी थी। आते वक्त बैठे थे वैसे ही लौटते वक्त भी में मेरी तीन सहेलियां क्षितिजा, लक्ष्वी,अक्षदा और 2 मिस,मिस मेघधा और मिस विशाली हमारे साथ थी।सबसे पहले हमने आते वक्त जैसा कपड़ा लगाया था वैसे ही लौटते वक्त भी हमने कपड़ा लगा दिया था। ताकि बाहर के कोई हमारी सीट के अंदर बैठ ने ना पाए।

रेल करीबन 2:00 बजे निकल गयी थी। दोपहर का समय था और हमें लगा कि रेल में पैंट्री होगी। इसीलिए हम लोगों ने बाहर से खाना नहीं खाया था।पर पता चला कि उस रेल में पैंट्री नहीं थी। और इसी कारण हमें शाम तक वैसे ही रहना पड़ा बिना कुछ खाए पर, जो हमारे पास कुछ था उसी में हम लोगो ने गुजारा किया था। दोपहर का समय था तो बहुत सारे लोग सो भी गए थे ।मैं और मेरी सहेली बीच-बीच में सो रही थी ,तो बीच-बीच में खेल भी रही थी, मस्ती कर रही थी, बातें कर रही थी ,और सबकी के चेहरे पर घर लौटने की खुशी महसूस हो रही थी। करीबन ५.०० और ६.०० के बिच आवाज आयी कि, चाय .....चाय ....चाय ,ले लो चाय और हमने चाय ले ली ।कम से कम मुझे लगता है मैंने दो -तीन बार चाय पी ली ।उसके बाद हर एक

स्टेशन जब भी रेल थोड़ी देर तक रुक जाती ,आधे लोग बाहर निकलते और कुछ ना कुछ लेने लग जाते।हमने भी बहुत सारी चीजें ले रखी थी। उस दिन और अगले दिन के लिए भी ले रखा था,जैसे फल ।और बहुत सारी चीजें स्टेशन पर मिल रही थी जैसे कि ,जलेबी भी मिली थी। ब्रेड और ऑमलेट भी खा लिया था।हम जल्दी से उतर जाते और भाग भाग कर जल्दी अपनी चीजे लेकर अन्दर रेल में आ जाते ।

खाना खाकर हम सब सो गए थे। अगले दिन सुबह उठे तो पता चला कि हमारे सर दीपक का किसी ने फोन चुरा लिया था। करीबन रात के 12:00 बजे यह हुआ था। 12:00 बजे चुरा लिया गया था। सर ने अपना फोन अपने जेब में रखा था और वे ऊपर सोए थे। फिर भी किसी ने उनका फोन चुरा लिया। जेब से निकालकर किसी ने चोरी की थी। उस घटना के बाद हम और सतर्क हो गए थे। हम अपना फोन कहीं पर भी रख दिया करते थे ।और दूसरे दूसरे कंपार्टमेंट में अपने दोस्तो के साथ बैठते थे। पर बाद में अक्ल आ गई और हम अपने समानो का और ध्यान देने लगे।दोपहर में खाना खा लिए और थोड़ी देर तक सो गए।उसके बाद हम खेलने लगे। अंताक्षरी खेलने लगे। श्याम को चाय पी ली। बाद में हम फिरसे खेलने लगे। क्योंकि हमारा वह आखिरी रेल सफर था और इसी लिए हमे समय व्यर्थ नही करना था।सबके साथ रहना था।

हम सब सुबह का इंतजार कर रहे थे।दुःख हो रहा था कि हम वापस घर जा रहे थे और साथ ही खुशी भी थी कि,इतने दिनों बाद घर जा रहे थे। और आखिरकार जिस सुबह का इतनी बेसबरी से इंतजार था वह सुबह आ गयी। हम 6:30 बजे मडगांव पहुंचने वाले थे। पर किसी कारण रेल देरी से थी। सबके चेहरे खिले हुए थे। भ्रहण आखिर समाप्त होने आया था। अगला स्टेशन थिविम था। ७.३० हो गए थे।और जो थिविम उतरने वाले थे वे अपने बैग लेकर खड़े हो चुके थे।उन्हें देखर पता नही हम भावुक हो गए। इतने दिन साथ बिताए थे। एक दूसरे के बहुत करीब आ चूके थे।याद आने वाली थी। और यही एहसास में मेरी आँखें भर आयी।अपने दोस्तो को गले

लगाया। ऐसा नही है कि ,अब हम नही मिलेंगे।मिलना तो कक्षा में होगा ही पर जैसे बनारस में थे एक साथ, साथ मे रहना,खेलना,खान,सोना वह कही ना कही याद आने वाला था।थिविम स्टेशन पर आधे उतर  गए हम अपनी अपनी खिड़कियो से उन्हें अलविदा करने लगे ,उनके परिवार वाले पहले से ही उन्हें लेने थिविम स्टेशन पर मौजूद थे।

यह सब तो पहुँच गए।अब हम कब पहुचेंगे इसी का इंतजार था।वह एक घंटा जा ही नही रहा था।और तभी एक बोर्ड दिखा जिसपर मडगाँव लिखा था। उसको देखकर मैंने चिल्लाया 'पहुँच गए,पहुँच गए।खुशी का ठिकाना नही था।उतरने के बाद सब अलग हो गए।अपने परिवार वालो के साथ घर चले गए।

**निष्कर्ष**:

यह मेरा पहला भ्रमण था। इससे पहले कभी इस तरह कॉलेज से नही गयी थी।और यह भ्रमण बहुत ही सफल और यादगार बन गया था।जिदंगी में पढ़ाई जितनी महत्वपूर्ण है ,उतना ही घूमना फिरना। इससे बहुत कुछ सीखने मिलता है ।और कुछ शानदार किस्से जिंदगी से जुद जाते है।हमारा यह ब्रह्मण १० दिन का था।वाराणसी,पटना,बिहार हम देखने जा रहे थे।जिस प्रकार सोचा था ,और जिस प्रकार लोग बताते है ।वैसे बनारस मुझे बिलकुल नही लगा।बनारस में भांति-भांति के विचारक बैठे हैं । ज्ञान गंगा बह रहती है वह,चाय चलती है वहा,और पान की गिलौरियां धड़ाधड़ मुंह में गायब हो कर सड़को पर दिखती है वहा। कहा भी जाता है, 'बनारस में सब गुरु, केहू नाहीं चेला।' इसलिए बनारस को कृपया उसकी टूटी सड़कों और गंदी गलियों से न देखें।वहाँ देखने लायक बहुत सारी चीजें है।कहाँ जाता है कि,काशी भगवानो का शहर था। वाराणसी, बनारसी रेशम की साड़ियों और पीतल के सामान के लिये भी प्रसिद्ध है। इसके अलावा बनारसी पान भी वहा का लोकप्रिय है।उस शहर ने बहुत कुछ सिखा है।बनारस में हमारी कुछ खटी और कुछ मिटी यादे है।भ्रमण के माध्यम से मुझमे में एक अनुभूति जागृत हो गयी, जिससे मैं भारत की विभिन्नताओं जैसे इतिहास , विज्ञान , शिष्टाचार, और प्रकृति को व्यक्तिगत रूप से जान सकी।इसके अतिरिक्त मुझमें समूह में रहने की प्रवृति तथा आत्मविश्वास की भावना प्रबल हो गयी।हमे अपने आप को किस तरह संभालना है। और उसी प्रकार अपने लिए आवाज उठानी चाहिए यह भी सिख मिली है।रेल में किस प्रकार सफर करना चाहिए इससे भी अवगत हो गयी। बुरे वक्त में जो व्यक्ति साथ रहता है वही सच्चा मित्र होता है ,सबके साथ मिलबातकर रहना चाहिए इससे परिचित हो गयी।हमारी विभाग अध्यक्ष मिस वृषाली,मिस मेघधा, सर दीपक इन्होंने हम सबका पूरी तरीके से ध्यान रखा।और इन्ही के कारण हम इतना दूर जाकर ,ज्ञान प्राप्त करने में सफल हुए। भ्रमण से दोस्तो के बहुत करीब आ गए थे।एक दूसरे से का लगाव हुआ था। सब एक दूसरे को संभाल रहे थे।मिस वृषाली और मिस मेघधा के साथ बहुत सारी यादे जुदी है।उनके साथ ज्यादा समय गुजारने मिला था। रेल में आते और जाते समय मैं मिस के साथ ही बैठे थे।सबके साथ ऐसे जुद गए थे मानो लग ही नही रहा था कि,दोस्तो के साथ आये थे। एक परिवार जैसा बना था। सभी हमारे अपने ही थे ,और इसकारण परिवार से इतना दूर रहकर भी उनकी उतनी ज्यादा याद नही सताई थी।ऐसे भ्रमण होने चाहिए, अलग अलग जगह पर जाकर बहुत सारा ज्ञान मिलता है।

# विषयःभ्रमण रिपोर्ट

नामःसिद्धी शिरोडकर

कक्षाःएम.ए(प्रथम वर्ष)

हजरी क्रः18